موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 6

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े–क़िस्त 6

(क़यामत के कुछ दृश्य)

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार

की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़्दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون * فتعالى الله الملك الحق﴾.

अर्थात:क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये जाओगे?तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति।
ए मोमिनों!पिच्छले दो उपदोशों में आखिरत पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित चर्चा की गई,जो कि यह हैं:सूर में फूंक मारना,क़्यामत की विशाल चिन्हें,मख़्लूक़ों(जीवों)को पुण:उठाया जाना,लोगों को मह़शर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सजा एवं हिसाब व किताब,स्वर्ग की नेमत(आशीर्वादों),नरक की गुनवक्ताएं,और आज हम इन्शा अल्लाह क़्यामत के कुछ दृश्यों के विषय में चर्चा करेंगे।
1.अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में क़्यामत के दृश्यों पर ईमान लाना भी शामिल है,उन दृश्यों में से यह भी है कि:नामाए आ़माल (कर्मपत्र)(गगन)में उड़ रहे होंगे,अत:लोग उन्हें(अपने हाथों से)प्राप्त करेंगे,कुछ लोग अपने दाएं हाथ से नामाए आ़माल (कर्मपत्र)लेंगे,ये सत्य मार्ग पर स्थिर रहने वाले होंगे,जबकि कुछ लोग बाएं हाथ से उसे पकड़ेंगे,ये काफिर होंगे,मोमिन खुशी खुशी अपने हाथ में नामाए आ़माल लेगा,अल्लाह का फरमान है:

﴿فأما من أوتي كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه * إني ظننت أني ملاق حسابيه * فهو في عيشة راضية * في جنة عالية * قطوفها دانية * كلوا واشربوا هنيئا بما أسلفتم في الأيام الخالية﴾

अर्थात:फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगा:यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ा।मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।तो वह अपने मन

चाहे सुख में होगा।उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।(उन से कहा जायेगा):खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों(संसार)में।

किंतु काफिर अपना नामाए अ़ामाल (कर्मपत्र) बाएं हाथ से अपनी पीठ के पीछे से प्राप्त करेगा,जिस प्रकार उसने अल्लाह की पुस्तक को पीठ पीछे डाल रखा,उसी प्रकार उसको अपना नामाए अ़ामाल भी पीठ पीछे से दिया जाएगा,ताकि उसे पूरा बदला मिल सके,अतःवह शोक व खेद एवं हसरत के साथ अपना नामाए अ़ामाल पकड़ेगा,अल्लाह का कथन है:

﴿وأما من أوتي كتابه بشماله فيقول يا ليتني لم أوتَ كتابيه * ولم أدر ما حسابيه * يا ليتها كانت القاضية * ما أغنى عني ماليه * هلك عني سلطانيه﴾

अर्थातःऔर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगाःहाय!मुझे मरो कर्मपत्र दिया ही न जाता!तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?।काश मेरी मौत ही निर्णायक होती!नहीं काम आया मेरा धन।मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وأما من أوتي كتابه وراء ظهره * فسوف يدعو ثبورا * ويصلى سعيرا * إنه كان في أهله مسرورا * إنه ظن أن لن يحور * بلى إن ربه كان به بصيرا﴾

अर्थातःऔर जिन को उन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा तो वह विनाश(मृत्यु)को पुकारेगा। तथा नरक में जायेगा।वह अपनों में प्रसन्न रहता था।उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।क्यों नही?निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।

2.ए मोमिनो!क़यामत का एक दृश्य यह होगा कि नरक की पीठ पर पुल सरात का निर्माण किया जाएगा,फिर लोग उस पर से गुजरेंगे,मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत सर्वप्रथम उस पर से गुजरेगी,वह पैर फिसलने का स्थान होगा,अर्थात पैर उस पर फिसलेंगे,स्थिर नहीं रहेंगे,उस पर आंकड़े एवं कठोर प्रकार के विस्तृत एवं विशाल कांटे लगे होंगे,उन में एक ऐसा कांटा भी होगा जो मुड़ा हुआ होगा,वह सादान नाम के वृक्ष का कांटा होगा जो नज्द में हुआ करता है,पुलसरात से गुजरते हुए लोगों के तीन प्रकार होंगेःबिल्कुल सुरक्षित मुक्ति पाने वाला,घायल हो कर मुक्ति पाने वाला,और वह जो नरक की अग्नि में गिर जाएगा,अतःआंकड़ों एवं कांटों से कुछ लोग बच जाएंगे,उनको न घाव आयेगा और न वे कांटों के चपेट में आयेंगे,वे पूर ईमान वाले लोग होंगे जिन्हों ने अल्लाह की आज्ञा मानी और उसके अवज्ञा से बचते रहे।

ए मुसलमानो!दूसरे प्रकार में वे लोग होंगे जो आंड़कों से घायल हो जाएंगे,किंतु उनक चपेट में न आ सकेंगे और पुलसरात पार करने में सफल हो जाएंगे,उनके नामाए आ़माल में ऐसे पाप होंगे जिन से नरक में प्रवेश वाजिब(अनिवार्य)नहीं होता,बल्कि केवल घायल होना ही आखिरत में उनकी यातना होगी,उसके पश्चात उन्हें मुक्ति मिल जाएगी।

तीसरे प्रकार में वे लोग होंगे जिन्हें आंकड़े अपने चपेट में ले लेंगे और बलपूर्वक उन्हें नरक में फेंक देंगे,ये ऐसे मोमिन होंगे जो अपने पाप एवं बड़े पापों के कारण नरक में जाने के पात्र होंगे,यही स्थिति मोनाफिक़ों(कपटियों)की होगी,उन्हें भी आंकड़े उचक लेंगे और नरक की अग्नि में डाल देंगे,अल्लाह की शरण।किंतु मोमिनों को उनके पापों के समान नरक में यातना दी जाएगी फिर उन्हें निकाल दिया जाएगा,किंतु मोनाफिक़ों को स्वेद के लिए नरक के सबसे निचले चरण में रहना होगा,रही बात काफिरों की तो उन्हें पुलसरात के निर्माण से पूर्व ही नरक की ओर हांक कर ले जाया जाएगा,अल्लाह का कथन है: (وسيق الذين كفروا إلى جهنم زمرا)

अर्थातःतथा हॉके जायेंगे जो काफिर हो गये नरक की ओर झुण्ड बना कर।

तथा अल्लाह ने फिरआ़ौन के संबंध में फरमायाः

(يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار وبئس الورد المورود)अर्थातःवह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा,और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है।

अतःउन में से प्रत्येक समूदाय मूर्ति,सूर्य और चॉद जैसे अपने परमेश्वर का अनुगमन करत हुऐ(नरक में प्रवेश करेगा),प्रत्येक समूह अपने परमेश्वर के साथ नरक में प्रवेश करेगा,नरक उनके सामने चमकती रैत के जैसे स्पष्ट होगी,उसके भाग आपस में एक दूसरे को चौड़ा चौड़ा कर रहे होंगे,अतःवे लगातार उसमें गिर जाएंगे।अल्लाह हमें इससे सूरक्षित रखे।[1]

अल्लाह के बंदो!पुलसरात पर लोगों की गति उनके बस में न होगी,और न उनकी शारीरिक शक्ति से उसका कोई संबंध होगा,बल्कि उनके अ़मलों(कार्यों)के अनुरूप उनके गुजरने की गति होगी,जैसा कि इस ह़दीस में आया है(जिस में है कि):उनके आ़माल उनको लेके दौड़ेंगे।[2]अतःजिस का अ़मल पुण्य एवं उत्तम होगा वह तेज गति से गुजर जाएगा,कोई पलक झपकने के जैसे गुजर जाएगा,कोई बिजली के जैसे गुजर

---

[1]देखें:सह़ी बोखारी(7437)और मुस्लिम(182),अबूहोरैरा का वर्णन,इसी प्रकार देखें:सह़ी बोखारी(4581)और मुस्लिम(183)अबू सईद का वर्णन।

[2] देखें:सह़ी मुस्लिम(195)ह़ोज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु की रिवायत

जाएगा,कोई हवा के गुजरने के जैसा(तेजी से)गजर जाएगा,कोई पक्षि गुजरने के जैसा,कोई तेज गति वाले घोड़े और सवारी के जैसे और कोई मनुष्य के दौड़ने के जैसा गुजर जाएगा,यहां तक कि अंतिम व्यक्ति घिसट घिसट कर गुजरेगा,जिसका अ़मल बुरा होगा वह धीमी गति से गुजरेगा,और यदि वह नरक का पात्र होगा तो आंकड़े उसे दबोच लेंगे।[3]

3.ए मोमिनो!क़्यामत का एक दृश्य यह भी होगा कि कुछ मोमिनों को स्वर्ग एवं नरक के बीच एक पुल पर रोका जाएगा,उस दिन उन मोंमिनों को जिन्हें नरक की यातना दी जाएगी,नरक से निकलने के पश्चात उन्हें स्वर्ग एवं नरक के बीच एक पुल पर रोका जाएगा,ताकि उनके दिलों में जो ईर्ष्या जलन,घृणा कीना होगी,उससे उनको पवित्र किया जाए,क्योंकि पूर्णता से दिलों के पवित्र एवं साफ होने के पश्चात ही वे स्वर्ग में प्रवेश कर सकेंगे,इमाम बोखारी ने अल्लाह के फरमान

﴿ونزعنا ما في صدورهم من غل ﴾

की व्याख्या में अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लहु अंहु से वर्णन किया है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"ईमान वाले नरक से छुटकारा पाएंगे तो नरक एवं स्वर्ग के बीच उन्हें एक पुल पर रोक दिया जाएगा,फिर दुनिया में जो एक दूसरे पर अन्याय किया होगा उसका क़िसास(बदला)लिया जाएगा,यहां तक कि जब वे पवित्र हो जाएंगे तो उन्हें स्वर्ग में प्रवेश होनी की अनुमति होगी।उस हस्ती की शपथ जिसके हाथ में मोहम्मद की जान है!स्वर्गवासियों में से प्रत्येक अपना स्थान दुनिया में अपने घर के अपेक्षा में अधिक जानने वाला होगा"।[4]

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाहु फरमाते हैंःख़बीस एवं अपवित्र आतमाओं के लिए पवित्र स्वर्ग में प्रवेश करना उचित नहीं,जहां किसी भी प्रकार की ख़बासत अपवित्रता नहीं होगी,इस लिए खबीस व अपवित्र आतमाओं के लिए यह उचित नहीं होगा कि वे पवित्र स्वर्ग में प्रवेश करें।[5]

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा

---

[3] इसका प्रमाण देखेंःसही बोखारी(7437)और मुस्लिम(182)।

[4] इसे बोखारी(6535)ने वर्णित किया है।

[5] देखेंः"फतावा इब्ने तैमिया"(14/344)संक्षेप से साथ।

की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.अल्लाह आप पर कृपा करे!आप यह जान लें कि क़्यामत के दिन एक दृश्य यह भी होगा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़्यामत के दिन शिफाअ़त(अनुशंसा)करेंगे,शिफाअ़तं उ़ज़्मा(महान अनुशंसा)जिसका उल्लेख पूर्व में बीत चूका है,उसके अतिरिक्त चार प्रकार की शिफाअ़तें होंगी।आपकी प्रथम शिफाअ़त मोंमिनों के हित में स्वर्ग में प्रवेश के लिए होगी,क्योंकि मोमिनीन जब स्वर्ग के पास आएंगे तो उसके द्वार बंद होंगे,उस समय पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वर्ग के द्वार पर दस्तक देंगे,स्वर्ग का खाजिन[6](रक्षक)पूछेगाःआप कोन?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाएंगेःमोह़म्मद।वह कहेगाःमुझे आदेश दिया गया है कि आप से पूर्व किसी के लिए द्वार न खोलूं।[7]

अनस बिन मालिक रज़ीटल्लाहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःलोगों में प्रथम व्यक्ति हूंगा जो स्वर्ग के बारे में अनुशंसा करेगा और समस्त पैगंबरों से मेरे अनुयायी अधिक होंगे।[8]

ज्ञात हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वर्ग में प्रवेश करने वाले र्स्वप्रथम व्यक्ति होंगे,आप से पूर्व कोई प्रवेश नहीं कारेगा,इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मत का स्थान स्पष्ट होता है,वह इस प्रकार से कि र्स्वप्रथम आप और आपकी उम्मत स्वर्ग में प्रवेश होगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूसरी सिफारिश(अनुशंसा)उन लोगों के हित में होगी स्वर्ग में प्रवेश के विषय में होगी जिन से कोई हिसाब व किताब न होगा,इसका प्रमाण अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु की शिफाअ़त वाली लम्बी ह़दीस है,उसमें है किःए

---

[6] खाजिन का अर्थ होता है रक्षक,यह प्रसिद्ध है कि स्वर्ग के रक्षक का नामःरिज़वान है,जब कि इसका कोई सत्य प्रमाण नहीं है,सत्य यह है कि उसे स्वर्ग के खाजिन एवं रक्षक ही के नाम से जाना जाए जैसा कि ह़दीस में आया है,यह लाभ मुझे शैख मोह़म्मद बिन अ़ली आदम अलअसयूबी रह़िमहुल्लाहु से प्राप्त हुआ है।

[7] इसे मुस्लिम(197)ने अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।

[8] इसे मुस्लिम(196),अह़मद(3/140)और दारमी ने अपने प्राक्कथन,खण्ड أعطي النبي من الفضل।वर्णित किया है।

मोह़म्मद!आप अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन का कोई हिसाब व किताब नहीं,स्वर्ग के दाएं द्वार से स्वर्ग में प्रवेश करें[9]।[10]

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीसरी सिफारिश उन पापी मोमिनों के हित में नरक से निकलने के लिए होग जो अपने पापों के कारण रनक में प्रवेश होंगे,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ह़दीस में यही सिफारिश हैः"प्रत्येक नबी के लिए एक दुआ़ स्वीकृत थी जो उसने दुनिया में करली किंतु में चाहता हूं कि अपनी दुआ़ को आखिरत में अपनी उम्मत की सिफारिश के लिए सुरक्षित रखूं"।[11]तथा आप की यह ह़दीस किः"मेरी सिफारिश मेरी उम्मत के लिए उन लोगों के लिए होगी जिन्हों ने बड़े बड़े पापों को किया होगा।[12]

चौथो सिफारिशःनबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चचा अबू तालिब के हित में यातना को हलका करने के लिए करेंगे,क्योंकि वह आपकी रक्षा करता और मुश्रिकों के संकट से आप की रक्षा करता था,अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,उन्हों ने पैगंबर सल्लल्लाह़ अलैहि वसल्लम से पूछा कि आपने अपने चचा अबू तालिब को क्या लाभ पहुंचाया जो आपकी सहायता करता था और आप के लिए दूसरों से नाराज रहता था?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"वह टखनों तक हलकी अग्नि में है,यदि में न होता तो वह अग्नि की तह में बिल्कुल नीचे होता"।[13]

अल्लाह के बंदो!क़यामत के चार दृश्य हैंःनामाए अ़माल(कार्य सूची)का(हवा में)उड़ना,नरक की पीठ पर पुल सरात का होना,स्वर्ग व नरक के बीच एक पुल सरात पर कुछ मोमिनों का ठहरना,और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वे पांच सिफारिश जो आप क़यामत के दिन करेंगे।

हे अल्लोह!हमें आखिरत में अपने नबी मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफारिश से सम्मानित फरमा।

---

[9] मेंने कहाःइससे उनकी महत्ता स्पष्ट होती है,क्योंकि स्वर्ग के सात द्वार हैं जैसा कि कुरान में आया हैः, ﴿لها سبعة أبواب﴾इन समस्त द्वारों के बजाये उनका दाई द्वार से प्रवेश होना उनकी श्रेष्ठता का प्रमाण है,क्योंकि दाईं(ओर)की श्रेष्ठता इस्लाम में ज्ञात एवं प्रसिद्ध है।

[10]इसे बोखारी(4712)ने वर्णित किया है।

[11] इसे बोखारी(6304)और मुस्लिम(198)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।

[12] इसे तिरमिज़ी(2435),अबू दाउूद(4739),अह़मद(2/213)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने अलकिश्कात(5599. 5598)में इसे सह़ी कहा है,अनस बिन मालिक की रिवायत।

[13] इसे बोखारी(3883)और मुस्लिम(209)और अह़मद(1/206)ने रिवायत किया है।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग को मांगते हैं और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तुझ से तेरी शरण चाहते हैं नरक से और ऐसे कार्य एवं कथन से भी जो नरक से निकट करे।

हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान कर जो तुझ से निकट करदे।

हे अल्लाह!हमने अपना बड़ा हानि किया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा नहीं करेगा तो निसंदेह हम हानि पाने वालों में से हो जाएंगे।

हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों को क्षमा करदे,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक के हों अथवा **बाह्य**।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

२१ मोह़र्रम **१४४३** हिजरी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com